ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

"ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

हरीश कंसल, सहायक प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
बीनू यादव, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर

सारांश

अध्ययन का शीर्षक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के अध्यनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का पर्यावरण के पर्यावरण के प्रतिमें शहरी एवं अभिवृति का की प्रकृति के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन है। उद्देश्य के रूप ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध समस्या ध्यान में रखते हुए अध्ययन बाली क्ली ने वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। मातृमिक विद्यालयों के जनपद के जनसंख्या के रुप में Noida कक्षा-10 में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं को जनसंख्या Noida जनपद न्यादर्शन विधि अरा चपान कर उसमें अध्ययनरत् माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयन स्तरित याद्दच्छिक 150 विधार्थियों का चयन के 4 माध्यमिक विद्यालयों का साधारण याद्दच्छिक विधि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से किया गया है।

1.1 प्रस्तावना :

यदि मानव उत्पत्ति के समय से लेकर वर्तमान वैज्ञानिक युग तक के इतिहास को पढ़ा जाए, तो ज्ञात होगा कि मानव और पर्यावरण के सम्बन्धों में समय से साथ-साथ परिवर्तन होता रहा है। कभी-कभी एक ही समय में विभिन्न स्थानों पर मानव और पर्यावरण के सम्बन्ध परिवर्तित होते रहते हैं। वर्तमान में विश्व की जनसंख्या 730 अरब से अधिक है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण पृथ्वी का पर्यावरण संकट में आ गया है। औद्योगिकरण के कारण प्रदूशण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। उत्पादन में आशातीत वृद्धि होने पर भी खाद्यान्नों और ऊर्जा संसाधनों का अभाव अनुभव करना पड़ रहा है। सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ प्रतिवर्ष हजारों मनुष्यों को काल के गाल में भेज देती हैं। सड़कों पर चलते वाहनों की संख्या तथा औद्योगिकरण में वृद्धि के फलस्वरूव सड़क दुर्घटनाओं तथा औद्योगिक दुर्घटनाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

आज का मानव इस समय दुविधा में है, उसके सामने दो रास्ते हैं- एक रास्ता यह है, कि वह निरन्तर विकास करता रहे, और पर्यावरण को इस सीमा तक असन्तुलित और दूषित कर ले, कि भविष्य में पृथ्वी पर से मानव जाति का अस्तित्व ही लुप्त हो जाये। दूसरा रास्ता यह
है, कि मानव विकास की गति को धीमी कर दे। सीमित संसाधनों का संरक्षण करे, संसाधनों के अनावश्यक प्रयोग से होने वाली बर्बादी पर रोक लगाए, जनसंख्या वृद्धि दर को घटाएँ और अपनी भावी पीढ़ी के लिए पर्यावरण को सुरक्षित रखें।

मनुष्य द्वारा किये गये जंगलों के विनाश और औद्योगिकरण से केवल जल, वायु और भूमि ही प्रभावित नहीं हुई है, वरन् जैव मण्डल के जीवों पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पृथ्वी का पारितन्त्र निरन्तर बिगड़ता जा रहा है, भारी मात्रा में हानिकारक तथा दूषित पदार्थ वातावरण में मिल रहे हैं । निकृष्ट पदार्थ पारितन्त्र में इकट्ठे हो रहे हैं, और पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं।

1.2 समस्या का महत्व:

किसी भी अनुसंधान या प्रयोग को करने के बाद प्रमुख प्रश्न एक ही होता है कि जो कार्य किया गया है उसका अध्ययन क्षेत्र की दृष्टि से और मानव कल्याण के लिए कितना उपयोग किया जा सकता है। ऐसा ही प्रश्न इस कार्य से सम्बन्धित है। अनुसंधानकर्ता ने इस समस्या का ही चयन क्यों किया ? जैसा कि ज्ञात है कि भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम तथा पर्यावरण संरक्षण विद्यार्थियों की विशिष्ट भूमिका रही है। इन्होंने पुरानी मान्यताओं एवं परम्पराओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे तथा जीव जन्तुओं का अप्रत्यक्ष रूप से संरक्षण किया है। विद्यार्थी अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करते हैं।

समाज धीरे-धीरे बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगिकीकरण के कारण रहन-सहन व सोचने के तरीके में परिवर्तन आया इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म दिया। आज मनुष्य

पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम करने के बजाए अपनी सुविधानुसार कार्य करने को अधिक महत्व दे रहे हैं। जिसके फलस्वरूप संरक्षण की ओर कोई ध्यान न दिए जाने के कारण ही अनेक जन्तुओं तथा पेड़-पौधे की दुर्लभ प्रजातियाँ तेजी के साथ नष्ट होती जा रही हैं । अतः आज यह ज्ञात किए जाने की आवश्यकता है, कि वर्तमान युग में विद्यार्थियों द्वारा पर्यावरणीय प्रदूषण की रोकथाम तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या प्रयास किये जा रहे हैं।

1.3 समस्या का स्पष्टीकरण:

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर जिससे प्रदूषण व प्रदूषण के प्रकार के बारे में व्याख्या की गयी है। यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जनपद गौतम बुद्ध नगर के माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का पर्यावरणीय ज्ञान का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया था।

1.4 समस्या कथन:

चूंकि पर्यावरण की समस्या से सबसे अधिक प्रभावित हमारा समाज, जीव-जन्तु तथा अन्य हो रहे हैं। अतः शोधकर्ता ने इस अध्ययन की समस्या को छात्र-छात्राओं के पर्यावरण अभिवृत्ति तक ही सीमित रखा। इस प्रकार लघु शोध प्रबन्ध की समस्या निम्न प्रकार है।

"ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

1.5 अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का प्रमुख उद्देश्य गौतम बुद्ध नगर जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के कुछ गौण उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति के आधार पर परस्पर तुलना करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण अभिवृत्ति के आधार पर परस्पर तुलना करना ।
3. शहरी छात्र एवं छात्राओं के मध्य पयार्वरण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के पर्यावरण अभिवृत्ति के आधार परपरस्पर तुलना करना ।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों का पर्यावरण अभिवृत्ति के आधार पर परस्पर तुलना करना ।

1.6 परिकल्पनाएँ:

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है ।
3. शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई अन्तरनहीं होता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्राओं के पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होता है ।

1.7 पर्यावरण अभिवृत्ति प्रश्नावली का विवरण:

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है इस साक्षात्कार अनुसूची में 35 प्रश्न हैं । प्रश्नों का निर्माण इस प्रकार किया है किवे विद्यार्थी के प्रदूषण के पाँचों प्रकार वायु प्रदूशण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं रेडियोधर्मी व भूमि प्रदूषण सम्बन्धी ज्ञान को प्राप्त कराते हैं ।

1.8 प्रयुक्त सांख्यिकी:

सांख्यिकी अनुसंधान क्षेत्र में विभिन्न तथ्यों व समस्याओं का अध्ययन तथा उनमें घटित होने वाले परिवर्तनों के कारणों व परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए मूल्य आधार के समान है। प्रो० वाडिंगटन के अनुसार - "सांख्यिकीय अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य भूतकालीन एवं वर्तमान तथ्यों की तुलना करके यह ज्ञात करना है कि जो भी परिवर्तन हुए हैं उनके क्या-क्या कारण है और उनके क्या-क्या परिणाम भविष्य में हो सकते हैं।"

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

1.9 अध्ययन का सीमांकन:

इस अध्ययन को निम्नलिखित सीमाओं के अन्तर्गत पूर्ण किया गया है-

1. अध्ययन के लिए न्यादर्श का चयन गौतम बुद्ध नगर जनपद से किया गया। जिसके अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले 200 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।
2. अध्ययन के लिए ग्रामीण क्षेत्र के 50 छात्रों तक तथा 50 छात्राओं का चयन किया गया है ।
3. अध्ययन के लिए शहरी क्षेत्र के 50 छात्रों का तथा 50 छात्राओं का चयन किया गया है।
4. लघु शोध अध्ययन हेतु केवल गौतम बुद्ध नगर जनपद के ही विद्यार्थियों को लिया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- एन०सी०टी०ई० (2009) नेशनल कैरिकुलम फेमवर्क फॉर टीचर एजूकेशन (एन०सी०टी०ई०-ड्राफ्ट फॉर डिसकशन), नई दिल्ली: एन०सी०टी०ई० ।
- एम0एच0आर0डी० (2011) वार्षिक रिपोर्ट, मानव विकास एवं संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार (2010-2011): नई दिल्ली।
- एच0के0 कपिल (2015) सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा • भार्गव, महेश (2015) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, हरप्रसाद भार्गव, आगरा ।
- भटनागर, ए०बी० एवं मीनाक्षी, (2015) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- राजपूत, जे० एस० सक्सैना, एवं जाधोव, ऐ०बी० (2017) रिसर्च स्टडी इन्वायरमेन्टल एप्रोच एण्ड प्राइमरी लेवल, रीजनल कालेज ऑफ एजुकेशन भोपाल ।
- गुप्ता, अग्रवाल एण्ड राजपूत जे०एस०, (2018) ए0 स्टडी ऑफ इनवायरमेन्टल एवेयरनेस एण्ड चिल्ड्रेन ऑफ रूरल एण्ड अरबन स्कूल एण्ड नान फार्मल एजूकेशन सेन्ट्स रीजनल ऑफ एजूकेशन भोपाल।
- बालिया, शिरीष (2018) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।
- सिंह, अरूण कुमार, (2019) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, पटनाः मोतीलाल, बनारसी दास। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2019) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार : नई दिल्ली ।
- अस्थाना, श्रीवास्तव एवं अस्थाना (2020) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- गुप्ता, एस० पी० (2020) "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।